पाठ-22

बहादुर बेटा

आइए सीखें: ● सेवा भाव, त्याग, समर्पण, देश और समाज के प्रति प्रतिबद्धता ● योजक चिह्न ● पर्यायवाची शब्द ● उपसर्ग ● प्रत्यय ● मुहावरे बनाना उसके अर्थ समझना।

*(**पाठ का सार:** प्रस्तुत एकांकी में संकट के समय सहयोग करने की भावना को परिलक्षित किया गया है। कुलदीप और संदीप दो भाई अपनी बहन मधुर और माँ के साथ रहते हैं। स्कूल में कुलदीप को पता चलता है कि तूफान के कारण वर्षा होने से नदियों में बाढ़ आ गई हैं। वह सूचना माँ को देकर वह साथियों के साथ धन आदि संग्रह करने चला जाता है। उधर संदीप नदी में बाढ़ में फँसे लोगों को, अपनी जान की परवाह न करते हुए बचाता है। एक स्थान पर वह स्वयं नदी में डूबते-डूबते बचता है। इस प्रकार एकांकी परोपकार की भावना को रेखांकित करता हुआ मानवता की सेवा करने वाली संस्था 'रेडक्रास' संस्था का परिचय कराता है।)*

पात्र परिचय

माँ	:	
संदीप	:	बड़ा बेटा
कुलदीप	:	छोटा बेटा
मधुर	:	बेटी
एक युवक डॉक्टर और एक युवती	:	दोनों रेडक्रास के सदस्य
एक युवक	:	संदीप का मित्र

(मंच पर एक साधारण से घर में एक कमरा। मधुर बैठी पढ़ रही है। बीच-बीच में कार्नस पर रखी घड़ी को देख लेती है। उसी समय माँ अंदर से आती है।)

कुलदीप : माँ, माँ, तुमने सुना?

मधुर : तुम अब तक कहाँ थे कुलदीप ?

माँ : हाँ आज इतनी देर कैसे हो गई ?

शिक्षण संकेत : ■ पाठ प्रारंभ करने के पूर्व एकांकी की कथावस्तु कहानी के रुप में सुनाएँ। ■ अभिनय के साथ-साथ बच्चों से संवाद सुनें, पढ़वाएँ। ■ संवाद में उतार-चढ़ाव की स्थिति स्पष्ट करें।

कुलदीप : तुमने सुना नहीं माँ। बहुत बुरी हालत है।

माँ : किसकी बुरी हालत है? क्या हुआ ?

कुलदीप : माँ, तुम सुनती तो हो नहीं। बड़े जोर का तूफान आया है। नदियों में बाढ़ आ गई है। स्कूल में मास्टरजी कह रहे थे, गाँव के गाँव बह गए। सैकड़ों आदमी मर गए। जानवरों का तो कहना ही क्या ? मकान गिर पड़े। बस चारों तरफ हाहाकार मचा है। मास्टरजी ने कहा है कि हम लोगों को उनकी मदद करनी चाहिए, वहाँ जाना चाहिए। उनको कपड़े और पैसे देने चाहिए। (तेजी से बोलता चला जाता है)

माँ : तू तो बेटा, एक साँस में इतनी बात कह गया कि मेरी तो कुछ समझ में नहीं आया। सुना तो मैंने भी है कि जोर की बाढ़ आई है, पर इतना नुकसान हो गया, यह किसी ने नहीं बताया था।

मधुर : चर्चा तो आज हमारे स्कूल में भी हो रही थी पर ऐसी कोई बात मैंने नही सुनी कि इतना नुकसान हुआ ।

कुलदीप : तुमको कुछ पता भी है ? इतनें जोरों का तूफान आया कि नदी का सारा पानी गाँव में भर गया और अभी भी नदी बढ़ रही है। कल तक यहाँ भी बुरी हालत होने वाली है। इसलिए यह हुक्म हुआ है कि जो कोई जो कुछ भी कर सके, करे। जो युवक हैं और स्वस्थ हैं, वे वहाँ जाकर लोगों को बचाने का काम करें। जो धनी हैं वे धन दें, जिनके पास अनाज है वे अनाज दें। कपड़े हैं, कपड़े दें.....

माँ : हाँ, हाँ, यह तो होना ही चाहिए। मेरे पास पैसा तो नहीं है लेकिन जो कुछ हो सकता है वह अवश्य करूँगी। कहाँ भेजना है पैसा?

कुलदीप : वह तो लेने वाले यही आ जाएँगे। लेकिन मैं जा रहा हूँ।

मधुर, माँ: (एक साथ) तू कहाँ जा रहा है ?

कुलदीप : लोगों को बचाने ।

माँ : (हँसकर) तेरे विचार बहुत अच्छे हैं। लेकिन तू इतना छोटा है कि उनको क्या बचाएगा। खुद वे लोग तुझे ही बचाने की परेशानी में पड़ जाएँगे।

मधुर : काम करने को तो यहाँ भी बहुत हैं। चाहो तो तुम घर पर जाकर चंदा इकट्ठा कर सकते हो।

कुलदीप : वह तुम करना। मैं घर पर नहीं बैठ सकता।

माँ : अच्छा, अच्छा, पहले तू रोटी खा ले। और हाँ, संदीप अभी तक क्यों नही आया। कहीं वह भी.....

मधुर : हाँ, माँ, वह जरूर चले गए होंगे। वह दिन-रात इसी तरह की बातें किया करते हैं-मैं कुछ करना चाहता हूँ, मेरे पिता और मेरे चाचा ने आजादी की लड़ाई लड़ी थी। मेरे देश के हजारों लोगों ने अपने प्राण दिए थे। अपना सब कुछ लुटा दिया था। अब मुझे भी तो कुछ करना चाहिए। मुझे भी अपने देश की सेवा करनी चाहिए।

हाहाकार- रोने की ऊँची आवाजें।

(सहसा एक युवक का प्रवेश)

युवक : संदीप का घर यही है।

सब : (एक साथ) हाँ, हाँ, यही है। क्या बात है ?

युवक : मैं आपको यह बताने आया हूँ कि संदीप बाढ़ पीड़ित लोगों की सहायता करने के लिए चला गया है।

माँ : (घबराकर) क्या ?

मधुर : तो भैया चले ही गए।

युवक : लेकिन आप कोई चिंता न कीजिए। (तेजी से कहकर लौटता है।)

मां : सुनो तो बेटा, सुनो। कितनी देर हो गई उसे गए।

युवक : वह तो सुबह ही चले गए थे लेकिन मैं आपको जल्दी खबर नहीं दे सका।

(तेजी से चला जाता है।)

मधुर : मैं जानती हूँ। यह सब सुनकर वह रुक ही नहीं सकते थे।

कुलदीप : लेकिन मुझे तो रुकना पड़ेगा। बहुत बुरे हैं। सब कामों में वही आगे रहते हैं।

माँ : (हँसकर) वह बड़ा जो है। मुझे खुशी है कि वह ऐसा है। बिल्कुल अपने पिता पर गया है। जिंदगी भर वह भी यही करते रहे। कभी चैन से नहीं बैठे।

मधुर : और अब भैया भी नहीं बैठेंगे। अच्छा ही है, पिताजी का काम कोई तो करे। (एकदम माँ)

(सहसा रुक जाती है। माँ तब तक जैसे ध्यानस्थ हो गई हैं और धीरे-धीरे बोल रही हैं।

माँ : हे भगवान! यह सब क्या हो रहा है? कब दूर होगी ये परेशानियाँ। कितना बलिदान चाहता है तू? हे भगवान! तू मेरे बच्चे की रक्षा करना। वह खूब सेवा करे। पर... पर...

मधुर : (माँ को झकझोरकर) माँ, माँ, तुम कहाँ खो गई? क्या सोचने लगीं। हमें कुछ करना चाहिए। चलो, हम दोनों घर-घर से अनाज और धन इकट्ठा करें। और हाँ, बाढ़

पीड़ितों के लिए खाने की जरूरत भी तो होगी।

कुलदीप : खाना, कपड़ा, मकान सभी चीजों की जरूरत होगी। मास्टरजी कहते थे कि सरकार प्रबंध कर रही है। कैंप लगवा दिए हैं। माँ मैं जाता हूँ। स्कूल में वालंटियरों की जरूरत है। मैं कैंप में जाकर तो काम कर ही सकता हूँ।

माँ : क्यों नहीं कर सकता ? तू भी जा लेकिन एक बात का ध्यान रखना, नदी के पास मत जाना।

कुलदीप : मैं नदी के पास क्यों जाऊँगा। वह तो खुद ही हमारे पास आ गई है। (हँसकर) अच्छा, मैं चला।

माँ : लेकिन खाना तो खाता जा।

कुलदीप : नहीं, नहीं, देर हो जाएगी। वहीं कुछ खा लूँगा।

(तेजी से चला जाता है। बाहर शोर उठता है। माँ खिड़की से झाँकती है।)

मधुर : देखो, देखो, माँ कितने लोग इधर ही चले आ रहे हैं। और वह देखो ट्रक भी आ रहे हैं। ऐसा लगता है कि ये बाढ़ पीड़ित गाँवों से लोगों को निकाल कर ला रहे हैं। क्यों माँ, एक परिवार को तो हम भी अपने घर में रख सकते हैं।

माँ : क्या ही अच्छा हो यदि सभी ऐसा कर सकें। इससे तो बहुत सारी समस्याएँ खत्म हो जाएँगी। पता नहीं सरकार क्या करेगी? लेकिन मुझे खुशी है कि मेरे दोनों बेटे सेवाकार्य में लग गए। भगवान उनकी रक्षा करें।

मधुर : जो दूसरों की रक्षा करते हैं, भगवान उनकी रक्षा करते हैं।

माँ : हाँ, करते तो हैं।

(सहसा माँ फिर ध्यानस्थ हो जाती है। और वहीं बैठ जाती है। मधुर उसे फिर झकझोरना चाहती है लेकिन सहसा रुक जाती है। जैसे दूर कहीं से संगीत का मधुर स्वर उठता है। वह चारों और देखती है। तभी एक युवती वहाँ आ जाती है। उसके वस्त्रों पर रेडक्रास का चिह्न लगा हुआ है।)

युवती : क्या संदीप जी का मकान यही है?

मधुर : जी।

माँ : (आँखे खोलकर) संदीप, कहाँ है संदीप ? कैसा है वह ?

युवती : आप शायद उनकी माँ हैं। चिंता न कीजिए। कोई विशेष बात नहीं है।

मधुर : लेकिन आप कौन है?

शिक्षण संकेत : ■ प्राकृतिक आपदाएँ आने पर किन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। कक्षा में चर्चा करें।

युवती : मैं रेडक्रास की सदस्या हूँ। बाहर मेरे बहुत से साथी है। हम सब लोग बाढ़ पीड़ितों की सहायता करने के लिए गए हुए थे। आपके पुत्र संदीपजी ने वहाँ बहुत काम किया। अपने प्राणों की चिंता किए बिना उन्होंने सैकड़ों लोगों को बचाया। उनका साहस देखकर हम लोग दंग रह गए। हमारे मना करने पर भी उन्होंने जरा आराम नहीं किया। लेकिन अचानक .....

माँ और मधुर : (एक-साथ) अचानक क्या हुआ? बोलती क्यों नहीं? उन्हें क्या हुआ?

युवती : आप घबराइए नहीं, मैं बता रही हूँ। लोगों को बचाते-बचाते अचानक उनकी नाव उलट गई। उन्हें तैरना आता था। उन्होंने वहाँ भी लोगों की मदद की। जब तक सबको दूसरी नाव में नहीं चढ़ा दिया, तब तक वह नहीं चढ़े। और जब चढ़ने लगे तब सहसा पानी का बड़े जोर का रेला आया और वह बह गए।

माँ : (चीखकर) हाय राम !

युवती : (शीघ्रता से) नहीं, नहीं, दूसरे लोगों ने उन्हें शीघ्र बचा लिया। कठिन परिश्रम के कारण वह बेहोश हो गए हैं लेकिन हमने उन्हें फर्स्ट-एड दे दी है। बहुत जल्दी ही वह ठीक हो जाएँगे।

मधुर : वह हैं कहाँ ?

युवती : बाहर। गाड़ी में। आप मेरे साथ आइए उन्हें अंदर ले आएँ।

(सब तेजी से चले जाते हैं। मधुर एकदम लौटती है और पलंग बिछाती है। फिर बाहर की ओर भागती है। तभी वे सब संदीप को लाकर पलंग पर लिटा देते हैं।

युवती : (युवक को दिखाकर) यह हमारे डॉक्टर हैं। इन्होंने अच्छी तरह देख लिया है। डर की कोई बात नहीं है। अभी दो क्षण में इन्हें होश आ जाएगा।

युवक : मैं अभी एक और इंजेक्शन लगा देता हूँ। चिंता की कोई बात नहीं है। आपका बेटा बहुत बहादुर है।

मधुर : और आप लोग कम बहादुर हैं !

(इसी बीच में युवक संदीप को इंजेक्शन लगाता है। माँ संदीप के ऊपर झुकी हुई है। बार-बार उसके चेहरे को छूती है। मधुर कभी भैया की ओर देखती है, कभी रेडक्रास के सदस्यों के बैज को देखती है। तभी कुलदीप भागा हुआ आता है।

कुलदीप : माँ, माँ, मैंने सुना है..... (एकदम देखकर) अरे, यह तो भैया आ गए। क्या हुआ है उन्हें, और ये कौन हैं?

शिक्षण संकेत : ■ रेडक्रास संस्था के बारे में विस्तार से जानकारी दें।

मधुर : बाढ़ पीड़ितों को बचाते भैया स्वयं नदी में गिर गए। इन लोगों ने उन्हें बचाया है।थक गए हैं और कोई खास बात नहीं है।

युवक : बस, इन्हें होश आ रहा है। लेकिन आप लोग इनसे ज्यादा बातें मत कीजिए। शाम तक चुपचाप पड़े रहने दीजिए। रात को मैं आकर देख जाऊँगा।

माँ : हे भगवान! इस दुनिया में कितने अच्छे लोग हैं।

संदीप : (आँखे खोलकर) मैं, मैं, कहाँ हूँ ?

युवक : अपने घर में हो। यह तुम्हारी माँ है, बहन है, भाई है। और हम तुम्हारे साथी।

संदीप : ओह! तुम हो डॉक्टर। मुझे इतनी ही याद है कि जैसे मैं डूब गया हूँ और फिर कोई अंतरिक्ष में से आकर बचा रहा है। वह तुम थे।

युवती : संदीप बाबू आप बोलिए नहीं। एक-दो दिन आराम कीजिए।

संदीप : बहुत अच्छा डॉक्टर! आपकी आज्ञा का पालन होगा। (सब हँस पड़ते हैं)

युवक और युवती : (एक साथ) अच्छा, अब हमें आज्ञा दीजिए।

माँ : नहीं, नहीं ऐसे नहीं। बिना मुँह मीठा किए तुम नहीं जा सकते। अरे, मधुर ..... लो वह तो अंदर चली भी गई। शायद चाय बना रही होगी।

युवक : माँ, हमें तो आज्ञा ही दीजिए।

कुलदीप : समझ लीजिए, भैया को अभी होश नहीं आया है। बस पाँच मिनिट लगेंगे॥

(सब हँसते हैं। वह भी अंदर चला जाता है।)

माँ : आप लोग दुनिया की इतनी सेवा करते हैं। कभी-कभी हमें भी तो अवसर दिया कीजिए।

युवती : हम भी तो आपके ही हैं। और फिर आपने कम सेवा की है?

(दोनों मुस्कुराते हैं और अंदर से मधुर, कुलदीप चाय का सामान लेकर आते हैं। पर्दा गिरने लगता हैं।

- विष्णु प्रभाकर

लेखक परिचय : विष्णु प्रभाकर का जन्म 1912 में मीरनपुर, जिला मुजफ्फरनगर उत्तरप्रदेश में हुआ था। आपने साहित्य की विभिन्न विधाओं में कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी और रिपोर्ताज में रचनाएँ की हैं। इनकी रचनाएँ रोचक होने के साथ-साथ संवेदन शील भी हैं। उपन्यासों में 'ढलती रात', 'स्वप्नमयी', कहानी संग्रहों में 'आदि और अंत', 'संघर्ष के बाद', तथा एकांकी संग्रह 'डॉक्टर' और 'प्रकाश' और परछाइयाँ हैं।

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए-

हाहाकार	----------	ध्यानस्थ	----------
वालंटियर	----------	रेडक्रास	----------
फर्स्ट एड	----------	वैज	----------

प्रश्न 2 निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर लिखिए -

क. संदीप और कुलदीप को घर आने में देर क्यों हो गई?

ख. नदियों में बाढ़ आ जाने से क्या-क्या हानि होती हैं?

ग. रेडक्रास के सदस्य क्या कार्य करते हैं?

घ. संदीप पानी में कैसे बह गया था?

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए -

क. संदीप और कुलदीप को परोपकार की सीख कैसे मिली?

ख. संदीप द्वारा किए गए बचाव कार्य को युवती ने किस तरह बताया? लिखिए।

ग. बाढ़ पीड़ितों को क्या-क्या आवश्यकताएँ होती हैं? उन्हें किस तरह सहयोग दिया जाता हैं?

घ. इस एकांकी का सार आपने शब्दों में लिखिए?

ङ. बहादुर बेटा किसे कहा गया हैं । और क्यों ?

प्रश्न 4. निम्नलिखित कथनों में कौन, किससे कह रहा हैं-

''हाँ, माँ वह जरूर चले गए होंगे। वह दिन-रात इसी तरह की बातें किया करते हैं। मैं कुछ करना चाहता हूँ मेरे पिता और मेरे चाचा ने आजादी की लड़ाई लड़ी थी। मेरे देश में हजारों लोगों नें अपने प्राण दिए थे। अपना सब कुछ दिया था। अब मुझे भी तो कुछ करना चाहिए। मुझे भी अपने देश की सेवा करनी चाहिए।''

''खाना, कपड़ा, मकान सभी चीजों की जरूरत होगी। मास्टरजी कहते थे कि सरकार प्रबंध कर रही है। कैंप लगाए हैं। माँ मैं जाता हूँ। स्कूल में वालंटियर की जरुरत है। मैं कैंप में जाकर तो काम कर ही सकता हूँ।''

''आप लोग दुनिया की इतनी सेवा करते हैं। कभी-कभी तो हमें भी सेवा का अवसर दिया कीजिए।''

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. इस पाठ से योजक चिह्न वाले शब्द (जैसे धीरे-धीरे) छाँटकर लिखिए-

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों में से अनुस्वार और अनुनासिक वाले शब्द अलग-अलग लिखिए-

गंगा, माँ, पाँच, वंचित, हूँ, माँगने, पांडव, शांत, बाँध, संहारक, संसार, जाऊँगा।

प्रश्न 3. उदाहरण के अनुसार 'हृदय' तथा 'आँख', 'कान' शब्द से मुहावरे बनाइए तथा उनके अर्थ लिखिए-

हृदय

लगाना	– हृदय लगाना	– प्रेम करना
टूक-टूक होना	–	
भर आना	–	

आँख

तारा	– आँखों का तारा	– बहुत प्यारा
गिरना	–	
अंधा	–	
धूल झोंकना	–	
खुलना	–	

कान

खाना	– कान खाना	– शोर मचाना
कच्चा होना	–	
पकड़ना	–	
भरना		

प्रश्न 4. नीचे बनी आकृति में से निम्नलिखित शब्दों के 3-3 पर्यायवाची शब्द पहचानकर लिखिए-

जाह्नवी – ..... रात्रि – .....

जननी – ..... सूर्य – .....

गं	मा	ता	सु	र
भा	गा	माँ	र	वि
गी	अ	र	स	स
र	म्बा	ज	रि	वि
थी	नि	नी	भा	ता
शा	या	मि	नी	नु

प्रश्न 5. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-

लाज – तज – धीर

सूरज – भीख – माता

प्रश्न 6. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग और प्रत्यय पहचानकर अलग कीजिए-

गाड़ीवान, अपरिचित, प्रकाशित, प्रशंसनीय, रथवान, संहारक, बेकरार, मातृहीन, दयालु, सुशोभित।

प्रश्न 7. नीचे कुछ वाक्य/अनुच्छेद लिखे हैं, उनमें विराम चिह्न नहीं हैं, आप यथा-स्थान विराम चिह्न लगाकर उन्हें पुनः लिखिए-

(क) काश मैं उसे समझ पाता तो मैं उसके पास इस काम के लिए कभी नहीं जाता

(ख) रेखा पूनम सुनीता और राधा बगीचे में घूम रही हैं

(ग) जीवन में सुख दुख लाभ हानि तो लगे ही रहते है हमें इनकी कभी चिन्ता न करनी चाहिए

(घ) गीता में कहा है कर्म करो परन्तु फल की इच्छा मत करो

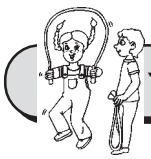

योग्यता विस्तार

1. तुम्हारे शहर या ग्राम की नदी में बाढ़ आ जाए तो आप किस प्रकार सहयोग करेंगें।
2. परोपकार संबंधी अन्य कोई एकांकी खोजकर शाला के वार्षिक उत्सव में मंचन कीजिए।
3. रेडक्रास संस्था के उद्देश्य और कार्यों के बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए।